

बिना धुएं वाली सिगरेट

डॉ. डी. बालसुब्रमण्यन

तंबाकू के लत लगने वाले यौगिक निकोटिन के सेवन का एक नया तरीका खोजा गया है। इसकी रिपोर्ट दी इकोनॉमिस्ट के 23-29 मार्च के अंक में प्रकाशित हुई है। इसमें हाल ही में खोजी गई इलेक्ट्रॉनिक सिगरेट या ई-सिगरेट के बारे में चर्चा है। उसमें कहा गया है कि कैसे यह नई खोज फिलहाल इस्तेमाल हो रही कागज़ी सिगरेट को पूरी तरह से हटा देगी। एक ई-सिगरेट से धूम्रपान करने के लिए न तो माचिस की तीली से सुलगाने की ज़रूरत है और न ही लाइटर की। इसकी बजाय इसमें एटमाइज़र शामिल है जो निकोटिन के घोल को वाष्पित (ज़्यादा अच्छी तरह से महीन एरोसोल स्प्रे या धुंध) करता है जिसे उपयोगकर्ता बिना धुएं के कश मार सकता है। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो वह धुएं की बजाय भाप लेता है। इस अंक में ई-सिगरेट के फायदे और नुकसान दोनों पहलुओं पर चर्चा की गई है। इसके साथ ही विभिन्न सरकारों, स्वास्थ्य संस्थाओं, एयरलाइंस और दूसरों की पॉलिसी की चर्चा भी की गई है। कुल मिलाकर यह एक संतुलित कॉलम है।

लेकिन इसी अंक के पेज 18 के संपादकीय में ई-सिगरेट के हक में दलीलें दी गई हैं और कहा गया है कि राजनेताओं और टांग अड़ाने वाले अन्य लोगों द्वारा इसे प्रतिबंधित करने की बजाय इसका स्वागत किया जाना चाहिए। इसके पक्ष में यह भी कहा गया है कि कुछ शोधकर्ताओं का मानना है कि कॉफी में पाया जाने वाला कैफीन भी कुछ कम खतरनाक नहीं होता।

इलेक्ट्रॉनिक सिगरेट है क्या बला? इसका आविष्कार ही क्यों किया गया, और लोग इसका इस्तेमाल क्यों करें, कैसे करें? इससे पहले चलिए हम निकोटिन के इस्तेमाल के इतिहास पर नज़र डालते हैं। सदियों से लोग तंबाकू का धूम्रपान करते आए हैं और निकोटिन की नसवार का उपयोग करते आए हैं (चबाने के अलावा भी)। इसके बाद इसकी जगह हुक्का, पाइप्स और बीड़ी या कागज़ में लिपटी



तंबाकू ने ले ली, जिन्हें जलाकर कश लगाए जा सकते हैं। सुविधाजनक बनने के कारण यह पूरी दुनिया में तेज़ी के साथ फैल गया। और इसके लिए उन कंपनियों को धन्यवाद जिन्होंने पहले तो तैयारशुदा सिगरेट बनाई और फिर विज्ञापनों के ज़रिए इसका खूब प्रचार-प्रसार किया।

केवल इसी वजह से सिगरेट धूम्रपान पूरी दुनिया में लोकप्रिय बना। यह एक फैशन बन गई और मेरी तरह कई दूसरे युवा भी इसके चक्कर में फंस गए। 1960 के दशक तक दुनिया के लगभग 50 करोड़ लोग ब्रॉन्डेड सिगरेट की तरफ झुक गए थे।

बेशक स्वास्थ्य सम्बंधी चेतावनियां लगातार दी जाती रहीं। जर्मन वैज्ञानिक फ्रिट्ज़ लिंकनिक ने धूम्रपान और फेफड़ों के कैंसर के बीच सम्बंध 1929 में ही स्थापित कर दिया था। और यूएस में स्वास्थ्य खोजकर्ताओं ने लगातार लोगों को धूम्रपान के खतरों के खिलाफ चेताया भी था। आखिरकार जब तत्कालीन यूएस सर्जन जर्नल डॉ. सी. एवरिट कूप ने जोशो-खरोश से धूम्रपान के खिलाफ अभियान चलाया, तब लोगों ने इसे गंभीरता से लिया और सार्वजनिक स्थानों (रेस्टोरेंट, प्लेन, ट्रेन और बस, कॉफ़्रेस हॉल, मूवी थियेटर) में धूम्रपान प्रतिबंधित हुआ। यह अभियान बहुत प्रभावी हुआ और यूएस के कुछ राज्यों में तो सिगरेट कंपनियों के खिलाफ धूम्रपान के नुकसान की जानकारी छुपाने (या जानकारी देने से इन्कार करने और तोड़ने-मरोड़ने) सम्बंधी मुकदमे दायर किए गए। इन मामलों में जो समझौते हुए वे काफी महंगे थे। भारत भी इसमें पीछे नहीं रहा और तंबाकू के इस्तेमाल को लेकर यहां भी नियम-

कायदे और पॉलिसी बनी।

बात सिर्फ लत या निकोटिन की नहीं है। सुलगाने और जलाने से धुआं पैदा होता है। और यह धुआं स्वास्थ्य के लिए नुकसानदायक है। इस प्रक्रिया में कार्बन मोनोऑक्साइड (एक रक्त-विष), नाइट्रोजन ऑक्साइड (जो शरीर में अणुओं को नष्ट करता है), और पूरी तरह न जलने के कारण टार (यह टार कैंसर के लिए ज्यादा ज़िम्मेदार है) बनते हैं। धूम्रपान के दौरान निकला धुआं केवल पीने वाले के लिए नुकसानदायक नहीं होता बल्कि पास खड़े व्यक्ति को भी नुकसान पहुंचाता है। कुछ समय से लोग अपने स्वास्थ्य को लेकर गंभीर हुए हैं और धूम्रपान करने वालों की संख्या में गिरावट आई है, जो कि सिगरेट कारखानों के लिए एक बड़ा धक्का है।

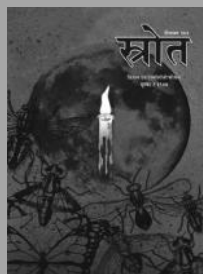
निर्माता चुप नहीं बैठे हैं, और वे नए रास्ते सोचते रहते हैं। और इसीलिए उन्होंने ई-सिगरेट पेश की है। ई-सिगरेट को न तो सुलगाने की ज़रूरत है और न ही वह धुआं छोड़ती है। यहां तक कि आप तंबाकू का इस्तेमाल भी नहीं करते। आप निकोटिन लेकर ग्लाइकोल में घोलें और एक इलेक्ट्रॉनिक विधि का इस्तेमाल करते हुए एक एरोसोल धुंध बनाएं और उसकी भाप का कश लें। न धुआं, न कार्बन मोनोऑक्साइड, न नाइट्रस मिक्स, न टार, न कैंसर (मैं इस आखिरी वक्तव्य के बारे में इतनी जल्दी कुछ कह नहीं सकता)।

यह ई-सिगरेट पारंपरिक कागज़ी सिगरेट की तरह ही दिखती है। इसके तीन हिस्से हैं - एक कार्ट्रिज जो निकोटिन

के घोल और एक मॉउथपीस को जोड़ता है। एक एटमाइज़र सेटअप जो भाप बनाता है। और एक बैटरी जो सिगरेट के सिरे को इलेक्ट्रॉनिक के ज़रिए सुलगाए रहती है। इससे कागज़ी सिगरेट की अनुभूति होती है। जो इस सिगरेट के लिए अतिउत्साहित हैं वो इंटरनेट पर इस लिंक accesswww.vcig.com पर जाएं और यूट्यूब पर ई-सिगरेट के बहुत सारे हिस्से दिखाए गए हैं उन्हें देखें। देखें कि कैसे इन्हें साथ रखा गया है, इसे कैसे पैक और इस्तेमाल किया जा सकता है। और कंपनी यह दावा कर रही है कि “न राख, न टार, न गंदी बदबू, न प्रदूषण, न कार्बन मोनोऑक्साइड, न पीले दांत...।”

तो दिक्कत क्या है? क्यों ई-सिगरेट को न बेचा जाए, इसका प्रचार-प्रसार क्यों न किया जाए? ये निकोटिन पैच या निकोटिन युक्त गम से बेहतर हैं, और ये धूम्रपान छोड़ने में मददगार हैं। सिगरेट कंपनी के विज्ञापन के अनुसार यह आपके लिए एकदम उपयुक्त हैं।

इसके पीछे क्या कारण हैं? क्या ये अगला फैशन स्टेटमेंट बन सकता है और निकोटिन की लत को और ज्यादा बढ़ा सकता है। और ये शायद ‘असली चीज़ की ओर ले जाने का रास्ता’ भी हो सकती हैं। इसके अलावा अपने आकर्षक ज़ायकों के चलते ये बच्चों को भी लुभा सकती हैं। इसके अलावा ये नए ‘डोप विक्रेता’ बन जाएंगे जैसे पहले अफीम विक्रेता हुआ करते थे। मैं कह नहीं सकता कि कितनी जल्दी ई-सिगरेट भारतीय बाज़ार पर कब्ज़ा कर लेगी। (**स्रोत फीचर्स**)



स्रोत के ग्राहक बनें, बनाएं

वार्षिक सदस्यता

व्यक्तिगत 150 रुपए संस्थागत 300 रुपए

सदस्यता शुल्क एकलव्य, भोपाल के नाम ड्राफ्ट या मनीऑर्डर से
ई-10, शंकर नगर, बी.डी.ए. कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल (म.प्र.) 462 016
के पते पर भेजें।